150th Birth Anniversary of Sardar Vallabhbhai Patel

Sardar Vallabhbhai Patel, born on October 31, 1875, in Nadiad, Gujarat, was a pivotal figure in India's struggle for independence and the country's subsequent integration. Known as the "Iron Man of India," Patel's tenacity, leadership and vision played a crucial role in unifying a fragmented nation post-colonial rule.

Patel's political journey began in earnest during the Kheda Satyagraha of 1918, where he mobilised farmers against oppressive taxation during a famine. His successful leadership earned him respect and recognition among the masses, and he emerged as a key figure in the Indian National Congress.

In the 1920s and 1930s, Patel worked closely with Mahatma Gandhi, participating in various movements such as the Non-Cooperation Movement and the Civil Disobedience Movement. He became known for his pragmatic approach, often balancing the ideals of non-violence with the harsh realities of colonial rule.

Patel's contributions to India's independence were substantial. His organisational skills were instrumental in establishing the Indian National Congress as a formidable political force. As a leader, he worked tirelessly to unite different factions within the Congress and forge alliances with various groups.

One of Patel's significant achievements was the Bardoli Satyagraha of 1928, where he successfully led farmers in a non-violent resistance against increased land revenue assessments. His leadership in this movement solidified his reputation as a champion of the agrarian community and demonstrated his ability to galvanise support among ordinary citizens.

In 1942, Patel was imprisoned during the Quit India Movement, where he advocated for complete independence from British rule. His unwavering commitment to the cause of freedom made him one of the key architects of India's liberation.

After India gained independence on August 15, 1947, Patel faced the monumental task of unifying over 500 princely states into a single nation. His vision was clear: a united India was essential for stability and progress. As the first Deputy Prime Minister and Minister of Home Affairs, Patel employed a combination of diplomacy and firmness to persuade reluctant rulers to accede to India.

His most notable achievement was the integration of states like Hyderabad and Jammu & Kashmir. Patel's strategy often involved negotiations, but he was not afraid to use military action when necessary, exemplified by the police action in Hyderabad. His efforts culminated in the formation of a cohesive and united India, ensuring that the diverse states would coexist under a common national framework.

Patel also championed social reforms, advocating for the upliftment of women and marginalised communities. He understood that a nation could only thrive if its citizens enjoyed equal rights and opportunities. His initiatives in education and rural development sought to empower the underprivileged and promote national integration.

Sardar Vallabhbhai Patel passed away on December 15, 1950, leaving behind a legacy of unity and resilience. His contributions to India's independence and nation-building have made him a revered figure in Indian history. In recognition of his efforts, Patel was posthumously awarded the title "Sardar," meaning leader or chief, which symbolises his leadership qualities and his role as a unifier.

Sardar Vallabhbhai Patel remains an enduring symbol of unity, determination, and visionary leadership. His life's work not only contributed to India's independence but also laid the foundations for a unified and progressive nation. As India continues to navigate the complexities of a diverse society, Patel's principles of tolerance, unity, and resilience are more relevant than ever. His legacy as the Iron Man of India will forever inspire those who seek to create a better, more integrated world.

India Post is proud to release a commemorative stamp on the 150th Birth Anniversary of Sardar Vallabhbhai Patel, honouring his unmatched contributions to India's unity and nation-building. This special issue stands as a tribute to the Iron Man of India, whose legacy continues to inspire generations. Through this stamp, India Post not only celebrates a national icon but also reaffirms its commitment to preserving and promoting the rich heritage and history of our nation.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Suresh Kumar
Text	:	Based on information provided by the proponent.

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts



विवरणिका BROCHURE

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जन्म वर्षगांठ
150TH BIRTH ANNIVERSARY OF SARDAR VALLABHBHAI PATEL

सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जन्म वर्षगांठ

31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में जन्मे सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम तथा तत्पश्चात देश के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''भारत के लौह पुरुष'' के रूप में विश्व–विख्यात, सरदार पटेल ने औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के बाद अपनी दृढ़ता, विलक्षण नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शिता के बल पर, अनेक रियासतों में बंटे राष्ट्र को एकजुट करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

सरदार पटेल की राजनीतिक यात्रा की वास्तविक शुरुआत वर्ष 1918 के खेड़ा सत्याग्रह से हुई, जहां उन्होंने अकाल के दौरान अंग्रेज सरकार द्वारा लादे गए दमनकारी कराधान के विरुद्ध किसानों को संगठित किया। उनके नेतृत्व में हुए इस सफल आंदोलन ने उन्हें जन–नायक के रूप में स्थापित किया और वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रतिष्ठित हस्ती के रूप में उभरे।

1920 और 1930 के दशक में, पटेल ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया और असहयोग आंदोलन तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे विभिन्न आंदोलनों में योगदान दिया। वे अहिंसा के उदात्त आदर्शों और औपनिवेशिक शासन की कटु वास्तविकताओं के बीच शानदार संतुलन बनाते हुए कार्य करने के अपने व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे।

कहना न होगा कि सरदार पटेल का भारत की स्वतंत्रता में अतुलनीय योगदान था। उनके संगठनात्मक कौशल ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा, उन्होंने कुशल नेतृत्वकर्ता के रूप में अपने अथक परिश्रम से कांग्रेस के भीतर विभिन्न गुटों को एकजुट रखने और अन्य समूहों के साथ गठबंधन स्थापित करने में असाधारण योगदान दिया।

पटेल की उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक सन् 1928 का बारदोली सत्याग्रह था। इस आंदोलन में उन्होंने तत्कालीन प्रशासन द्वारा भू–राजस्व में बढ़ोतरी के विरुद्ध किसानों के अहिंसक प्रतिरोध का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। इस आंदोलन में उनके सफल नेतृत्व ने कृषक समुदाय के नायक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को और भी सुदृढ़ किया और आम जनता के बीच जाकर व्यापक समर्थन जुटाने की उनकी क्षमता का प्रदर्शन किया।

वर्ष 1942 में, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पटेल ने ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। जिसके फलस्वरूप उन्हें जेल में डाल दिया गया। स्वतंत्रता के प्रति अपनी इसी अटूट प्रतिबद्धता के कारण वे भारतीय स्वतंत्रता के प्रमुख नायकों में से एक के रूप में उभरे।

15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद, सरदार पटेल के समक्ष 500 से अधिक रियासतों को एक देश के रूप में एकीकृत करने की विलक्षण चुनौती थी। उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि स्थिरता और प्रगति के लिए अखंड और एकजुट भारत अनिवार्य शर्त है। प्रथम उप–प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में, उन्होंने तमाम अनिच्छुक शासकों को भारत में विलय हेतु मनाने के लिए अपने शानदार कूटनीति कौशल और दुर्जेय दृढ़ता का असाधारण ढंग से उपयोग किया।

हैदराबाद और जम्मू–कश्मीर जैसी रियासतों का भारत में विलय करना उनकी सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि थी। पटेल की रणनीति में संवाद को प्रायः सबसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर वे सैन्य कार्रवाई से भी नहीं हिचकिचाते थे। इसका एक उदाहरण हैदराबाद में की गई पुलिस बल की सफल कार्रवाई से मिलता है। उनके इन प्रयासों के फलस्वरूप ही सुसंगठित और अखंड भारत का निर्माण हो सका और अनेक विविधताओं से भरे तमाम राज्यों ने एक साझा राष्ट्रीय ढांचे के अंतर्गत सह–अस्तित्व से रहना स्वीकार किया।

वे सामाजिक सुधारों के भी प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं तथा हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान की पुरजोर वकालत की। वे मानते थे कि कोई भी राष्ट्र तभी समृद्ध हो सकता है जब उसके नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। शिक्षा एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उनके द्वारा शुरू की गई पहलों का उद्देश्य वंचितों वर्गों का सशक्तीकरण करना और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना था।

सरदार वल्लभभाई पटेल का निधन 15 दिसंबर, 1950 को हुआ। वे अपने पीछे एकता और अखंडता की एक शानदार विरासत छोड़ गए। भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान ने उन्हें भारतीय इतिहास में श्रद्धेय हस्ती के रूप में स्थापित किया है। उनके प्रयासों को सम्मानित करते हुए, पटेल को मरणोपरांत ''सरदार'' की उपाधि से विभूषित किया गया। सरदार अर्थात नायक या प्रमुख, यह उपमा वल्लभभाई पटेल के नेतृत्वकारी गुणों और देश की एकता के सूत्रधार के रूप में उनकी भूमिका की प्रतीक है।

सरदार वल्लभभाई पटेल एकता, दृढ़ संकल्प और दूरदर्शी नेतृत्व के चिरस्थाई प्रतीक हैं। उन्होंने जीवन पर्यंत अपने कार्यों से न केवल भारत की स्वतंत्रता में योगदान दिया, बल्कि एकीकृत और प्रगतिशील राष्ट्र की नींव भी रखी। चूंकि भारत वर्तमान में भी विविधतापूर्ण समाज में उत्पन्न होने वाली तमाम जटिलताओं से घिरा हुआ है, इसलिए सरदार पटेल के सहिष्णुता, एकता और दृढ़ता के सिद्धांत आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। भारत के लौह पुरुष के रूप में उनकी विरासत दुनिया को बेहतर और एकजुट बनाने के लिए अथक परिश्रम में लगे हुए मनीषियों को सदैव प्रेरित करती रहेगी।

डाक विभाग, भारत की एकता और राष्ट्र निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल के अतुलनीय योगदान के सम्मान स्वरूप उनकी 150वीं जन्म वर्षगांठ पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह विशेष डाक–टिकट भारत के लौह पुरुष और पीढ़ियों को प्रेरित करने वाली उनकी विरासत के प्रति सम्मान का प्रतीक है। इस डाक टिकट के माध्यम से, भारतीय डाक न केवल इस महान राष्ट्रनायक के प्रति अपना असीम आदर प्रकट करता है, बल्कि देश की समृद्ध विरासत और इतिहास के संरक्षण और संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री सुरेश कुमार

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 202800
Stamps Printed	: 202800
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00